Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

MRDE-203

ग्रामीण विकास में संचार एवं विस्तार

(Communication and Extension in Rural Development)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

ग्रामीण विकास में संचार एवं विस्तार
(Communication and Extension in Rural Development)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खण्ड-1 : संचार के सिद्धांत (Principles of Communication)

1. संचार की अवधारणाएँ और सिद्धांत 1
(Concepts and Theories of Communication)

2. संचार के कार्य 10
(Functions of Communication)

3. पारस्परिक संचार 18
(Interpersonal Communication)

4. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और ग्रामीण विकास 29
(Electronic Media and Rural Development)

खण्ड-2 : संचार के तरीके और रणनीतियाँ (Methods and Strategies of Communication)

5. विकास के लिए संचार 39
(Communication for Development)

6. ICT4D – संचार और विकास 48
(ICT4D – Communication and Development)

7. ग्रामीण विकास में जनसंचार 56
(Mass Communication in Rural Development)

8. ग्रामीण विकास के लिए संचार रणनीतियां और विधियाँ 67
(Communication Strategies and Methods for Rural Development)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खण्ड-3 : ग्रामीण विकास में विस्तार (Extension in Rural Development)

9. अवधारणाएँ और दर्शन विस्तार 76
(Concepts and Philosophy of Extension)

10. दृष्टिकोण और विस्तार के तरीके 86
(Diffusion and Adoption of New Technologies)

11. नई प्रौद्योगिकियों का प्रसार और अपनाना 97
(Communication for Development)

12. ग्रामीण विस्तार : नवाचार और अनुभव 105
(Rural Extension: Innovations and Experience)

खण्ड-4 : ग्रामीणों के लिए विस्तार सहायता (Extension Support for Rural)

13. संचार सहायता 116
(Communication Support)

14. विस्तार प्रबंधन 127
(Extension Management)

15. संगठनात्मक संचार 137
(Organisational Communication)

16. ग्रामीण विकास के लिए विस्तार में अर्थशास्त्र रणनीति 146
(Economic Strategy in Extension for Rural Development)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

ग्रामीण विकास में संचार एवं विस्तार

(Communication and Extension in Rural Development)

MRDE-203

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. संचार की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए, जो समाज को क्रियाशील बनाती हैं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-13, प्रश्न 2, पृष्ठ-14, प्रश्न 3

अथवा

ग्रामीण विकास में इलेक्ट्रोनिक मीडिया के अनुप्रयोग का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-44, प्रश्न 1

प्रश्न 2. सामुदायिक रेडियो क्या है? किसानों के लिए सामुदायिक रेडियो का महत्व बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-34, प्रश्न 6, पृष्ठ-37, प्रश्न 3

अथवा

विकास पर आईसीटी के प्रभाव का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-54, प्रश्न 2, पृष्ठ-50, प्रश्न 1

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ग्रामीण विकास के लिए आपसी रणनीतियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-25, प्रश्न 9

(ख) संचार के मुख्य कार्य की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-13, प्रश्न 2

(ग) ग्रामीण विकास में नवाचार एवं अनुभवों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-112, प्रश्न 3

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

(क) मौखिक संचार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 3

(ख) समर्थन संचार का दायरा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-116, 'समर्थन संचार का दर्शन'

(ग) प्रबन्धन के कार्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-128, 'प्रबंधकों/प्रबंधन के कार्य', पृष्ठ-132, प्रश्न 3

(घ) सार्वजनिक वित्त पोषित विस्तार प्रणालियाँ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-129, 'सार्वजनिक वित्त पोषित विस्तार प्रणाली', पृष्ठ-135, प्रश्न 1

(ङ) मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-147, 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना', पृष्ठ-152, प्रश्न 8

(च) संचार के संगठनात्मक चैनल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-138, 'संचार के संगठनात्मक चैनल'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) संगठन में प्रवाह

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-137, 'संचार प्रवाह', पृष्ठ-143, प्रश्न 4

(ख) वैकल्पिक संचार

उत्तर–प्रभावी संचार सफल रिश्तों की नींव है, चाहे वह व्यक्तिगत हो या पेशेवर। इसमें आपका संदेश स्पष्ट रूप से, संक्षेप में और सम्मानपूर्वक व्यक्त करना शामिल है, जबकि दूसरों के प्रति भी ग्रहणशील होना। यहाँ कुछ प्रमुख पहलू हैं–

1. सक्रिय सुनवाई–वक्ता पर ध्यान दें, आँखों का संपर्क बनाए रखें और स्पष्टीकरण के लिए प्रश्न पूछें।

2. स्पष्ट अभिव्यक्ति–सरल भाषा का उपयोग करें, शब्दजाल से बचें और अपने विचारों को तर्कसंगत रूप से संरचित करें।

3. गैर-मौखिक संकेत–शरीर की भाषा, स्वर और चेहरे के भाव शब्दों जितना ही व्यक्त कर सकते हैं।

4. सहानुभूति–दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझें और स्वीकार करें।

5. प्रतिक्रिया–समझ में सुधार के लिए रचनात्मक प्रतिक्रिया दें और प्राप्त करें।

प्रभावी संचार का कार्यक्षेत्र–

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

1. विश्वास का निर्माण–मजबूत रिश्ते और विश्वसनीयता को बढ़ावा दें।

2. संघर्षों का समाधान–मुद्दों को तुरंत और सम्मानपूर्वक संबोधित करें।

3. सहयोग में सुधार–टीमवर्क और उत्पादकता को बढ़ाएं।

4. समझ में वृद्धि–गलतफहमी और त्रुटियों को कम करें।

(ग) नेतृत्व

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-129, 'नेतृत्व'

(घ) टीम में निर्माण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-133, प्रश्न 4

(ङ) जनशक्ति प्रशिक्षण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-117, 'जनशक्ति परीक्षण'

(च) रेडियो मेवात

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-118, 'रेडियो मेवात', पृष्ठ-124, प्रश्न 1

(छ) गोद लेने की प्रक्रिया

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-98, 'गोद लेने की प्रक्रिया', पृष्ठ-103, प्रश्न 5

(ज) विचारवान नेतृत्व।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-24, प्रश्न 7

■■

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

ग्रामीण विकास में संचार एवं विस्तार
(Communication and Extension in Rural Development)

संचार की अवधारणाएँ और सिद्धांत
(Concepts and Theories of Communication)

1

परिचय

संचार मानव व्यवहार या समाज का अध्ययन करने वाले किसी भी क्षेत्र या अनुशासन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। विद्वानों ने संचार सिद्धांतों को समझने के लिए विभिन्न परिभाषाएँ प्रदान की हैं, जिसमें स्टीफन टर्नर (1994) ने सिद्धांतों की तुलना कहानियों से की है कि घटनाएँ कैसे और क्यों होती हैं। जॉन बॉवर्स और जॉन कोर्टराइट (1984) ने एक पारंपरिक वैज्ञानिक परिभाषा प्रस्तावित की है, जिसमें कहा गया है कि सिद्धांत चर के वर्गों के बीच संबंधों को पुष्ट करने वाले कथन हैं। संचार मानव अस्तित्व का एक आवश्यक और आधारभूत हिस्सा है, क्योंकि यह जीवन का रचनात्मक या उद्देश्यपूर्ण अर्थ प्रदान करता है। संचार का एक संतुलित ज्ञान इस क्षेत्र का आधार माना जाता है। सिद्धांत चीजों को देखने का एक तरीका है। संचार के उपयुक्त सिद्धांत का गठन करने के बारे में बहुत सहमति और असहमति है। सिद्धांत सामाजिक और संचार दुनिया को समझने के तरीकों की व्यापक सरणी हैं, जो रुचि के विषय या अध्ययन के तहत विषय से संबंधित सामाजिक घटनाओं की व्याख्या और पूर्वानुमान लगाते हैं। वे मानव अनुभव के कुछ पहलुओं की अवधारणाओं, विवरणों और सिद्धांतों के संगठित समूह हैं, जो घटनाओं या व्यवहारों को स्पष्ट करते हैं और अराजकता से व्यवस्था को बाहर निकालते हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

संचार के तत्व

संचार सूचना, राय, भावनाओं या विचारों को साझा करने और आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया है। विल्बर श्राम (1971) और थियोडोरसन एवं थियोडोरसन (1969) जैसे विद्वानों ने इसे सामाजिक संदर्भ में मौखिक या लिखित रूप से विचारों और ज्ञान को व्यक्त करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है। रोजर्स (1973) और बेरेलसन एवं स्टीनर (1964) जैसे अन्य विद्वान भी सूचना या विचारों को प्रसारित करने की एक योजनाबद्ध या अनियोजित प्रक्रिया के रूप में संचार के महत्त्व पर जोर देते हैं। संचार के चार बुनियादी तत्व हैं–एन्कोडिंग (प्रेषक), ट्रांसमिशन मोड (ट्रांसमिशन का माध्यम), डिकोडिंग (रिसीवर) और फीडबैक। संचार प्रक्रिया में प्रेषक और रिसीवर के बीच संबंध महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि संदेश को प्रभावी ढंग से एनकोड और डिकोड करने के लिए उनके बीच प्रभावी संचार कौशल आवश्यक हैं।

संचार सूचनात्मक संकेतों के एक सेट के प्रति अभिविन्यास का साझाकरण है, जिसमें राय, तथ्य, प्रभाव, भावनाएं और मार्गदर्शन शामिल हैं। किसी स्रोत की सफलता प्रेषक के अनुभवों, कौशल, दृष्टिकोण और ज्ञान पर निर्भर करती है, जो संदेश और रिसीवर पर इसके प्रभाव को प्रभावित करते हैं। संचार के तत्वों में प्रेषक, एन्कोडिंग, संदेश, चैनल, डिकोडिंग, रिसीवर, फीडबैक और शोर या अवरोध शामिल हैं।

संचार के वर्गीकरण/रूप

संचार को दो मुख्य रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है–मौखिक संचार और गैर-मौखिक संचार।

मौखिक संचार में दृश्य, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक तरीके शामिल हैं, जिनमें संवाद, दृश्य डिजाइन, मुद्रित विज्ञापन, ज्ञापन, रिपोर्ट और लैपटॉप और मोबाइल फोन जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण शामिल हैं।

मौखिक संचार–मौखिक संचार में मौखिक और दृश्य सहायता के माध्यम से प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच सूचना या विचारों का आदान-प्रदान शामिल है। यह एक आम और प्रभावी तरीका है, जिसे अक्सर आमने-सामने या टेलीफोन पर बातचीत के माध्यम से किया जाता है। इसमें चेहरे के भाव और शरीर की हरकतें जैसी गैर-मौखिक विशेषताएं शामिल हैं। मौखिक संचार व्यक्ति-से-व्यक्ति, व्यक्ति-से-समूह या समूह-से-समूह हो सकता है। उदाहरणों में दुकानदारों, ग्राहकों, शिक्षकों और कक्षाओं में टीमों के बीच बातचीत, चर्च के उपदेश और टीमों के बीच बहस शामिल हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

गैर-मौखिक संचार–गैर-मौखिक संचार में हाव-भाव, स्पर्श, शारीरिक भाषा, चेहरे के भाव और आंखों के संपर्क के माध्यम से विचारों को भेजना और प्राप्त करना शामिल है, जो शारीरिक भाषा से अलग है लेकिन समान उद्देश्यों को बनाए रखता है। इसे 'निहितार्थ संचार' के रूप में भी जाना जाता है।

संचार के सिद्धांत

इस पाठ में संचार के अर्थ, प्रक्रिया और स्वरूपों पर चर्चा की गई है, फिर सामाजिक संरचनाओं में इसकी प्रासंगिकता को समझने और संचार के विषय में प्रासंगिक दृष्टिकोण एकत्र करने के लिए विभिन्न सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

1. शास्त्रीय सिद्धांत–

(क) अधिनायकवादी सिद्धांत–सत्तावादी (अधिनायकवादी) सिद्धांत का सुझाव है कि जनसंचार माध्यमों को राज्य के आदेश का पालन करना चाहिए, भले ही वह सीधे उसके नियंत्रण में न हो। जोहान्स गुटेनबर्ग के प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के बाद विकसित यह सिद्धांत नागरिकों को राज्य से कमतर या अधीन मानता है। अमीर, शक्तिशाली और कुलीन वर्ग को जनता का नेतृत्व करने का अधिकार है और जनसंचार माध्यमों को उनके द्वारा सही समझी जाने वाली बातों को संप्रेषित करने के साधन के रूप में देखा जाता है।

राज्य अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेस का उपयोग करता है और जनसंचार माध्यमों का उपयोग राज्य की अनुकूल छवि बनाने के लिए किया जाता है। सरकार जनसंचार माध्यमों पर दबाव डालती है, उन्हें सरकार के पक्ष में जानकारी प्रकाशित करने के लिए मजबूर करती है। सेंसरशिप की शुरुआत की जाती है, जिसमें सरकार का समर्थन करने वाले मीडिया संगठनों को लाइसेंस और विज्ञापन मिलते हैं, जबकि आलोचना करने वालों को प्रतिक्रिया और प्रकाशन अधिकारों में कटौती का सामना करना पड़ता है।

(ख) स्वतंत्र प्रेस सिद्धांत या स्वतंत्रतावादी सिद्धांत–17वीं शताब्दी के इंग्लैंड में निहित स्वतंत्रतावादी सिद्धांत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस को चौथे स्तंभ के रूप में वकालत करता है। यह प्रोटेस्टेंट सुधार के दौरान उभरा और सत्तावादी अवधारणाओं का विरोध किया। स्वतंत्रतावादियों ने प्रेस पर अभिजात वर्ग के नियंत्रण का विरोध किया। उनका मानना था कि यह राज्य की रक्षा और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने का एक साधन था। उनका मानना था कि व्यक्तियों को बिना किसी प्रतिबंध के अपने विचार व्यक्त करने की अनुमति देने से उनके और दूसरों के लिए बेहतर जीवन की ओर अग्रसर होगा।

(ग) सामाजिक उत्तरदायित्व सिद्धांत–स्वतंत्र प्रेस सिद्धांत के आलोचकों ने इसे सामाजिक उत्तरदायित्व सिद्धांत से प्रतिस्थापित करने की वकालत की, जिसमें समाज के प्रति जनसंचार माध्यमों की जिम्मेदारी पर जोर दिया गया। यह सिद्धांत, जो स्वतंत्र अभिव्यक्ति के आधार के रूप में नैतिकता पर जोर देता है, द्वितीय विश्व युद्ध और कम्युनिस्ट विरोधी आंदोलन के दौरान लोकप्रिय हुआ।

2. मैजिक बुलेट/हाइपोडेर्मिक नीडल थ्योरी–मास मीडिया एक विशिष्ट दर्शक वर्ग के लिए लक्षित संदेश बनाता है, जिससे ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, जिसे निष्क्रिय माना जाता है। यह सिद्धांत बताता है कि मास मीडिया का दर्शकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जो संभावित रूप से उनके व्यवहार को बदल सकता है। इस प्रभाव में योगदान देने वाले कारकों में चयनात्मक प्रदर्शन शामिल है, जो लोगों की रुचियों और विश्वासों के साथ संरेखित होता है और चयनात्मक धारणा एवं प्रतिधारण, जो उनके मौजूदा विचारों और विश्वासों के साथ संरेखित होता है।

3. एक चरण, दो चरण और बहु चरण प्रवाह सिद्धांत–एक कदम प्रवाह सिद्धांत का सुझाव है कि जनसंचार माध्यम बिना राय नेताओं के संदेशों को फिल्टर किए सीधे दर्शकों से संवाद करते हैं। दो कदम प्रवाह सिद्धांत इसे उलट देता है, जो जनसंचार माध्यमों से राय नेताओं और दर्शकों तक सूचना प्रवाह पर ध्यान केंद्रित करता है। बहु कदम प्रवाह सिद्धांत प्रेषक से दर्शकों तक संचार में कई हस्तक्षेपों पर चर्चा करता है।

4. मौन सिद्धांत का सर्पिल–सिद्धांत मौन के चक्र के माध्यम से जनमत निर्माण की व्याख्या करता है, जहाँ व्यक्ति अपने विचारों के कम होने के बारे में अनिश्चित महसूस करते हैं। मास मीडिया मुख्यधारा के विचारों को बढ़ावा देता है और दर्शक हाशिए पर जाने से बचने के लिए अपने विचारों को समायोजित करते हैं। जो लोग उम्मीद करते हैं कि उनके विचारों को स्वीकार किया जाएगा, वे खुले तौर पर उन्हें व्यक्त करते हैं, जबकि जो हाशिए पर जाने से डरते हैं, वे अपने विचारों को दबा देते हैं।

5. उपयोग और संतुष्टि सिद्धांत–1959 में एलिहू काट्ज द्वारा प्रस्तावित उपयोग और संतुष्टि सिद्धांत इस बात पर केंद्रित है कि लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए मीडिया का उपयोग कैसे करते हैं। यह सुझाव देता है कि व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सामग्री चुनते हैं और उसके अनुसार संतुष्टि प्राप्त करते हैं। यह सिद्धांत मीडिया लोगों का उपयोग कैसे करता है, इस पर ध्यान केंद्रित करता है, उद्देश्यों और संतुष्टि कैसे प्राप्त की जाती है। यह सकारात्मक प्रेरणा और मीडिया सामग्री के सक्रिय उपयोग के महत्त्व पर जोर देता है।

6. खेती सिद्धांत–1960 और 1970 के दशक में जॉर्ज गेर्बनर द्वारा विकसित मास मीडिया का संवर्धन सिद्धांत, दर्शकों पर टेलीविजन के दीर्घकालिक प्रभावों पर केंद्रित है। गेर्बनर का तर्क है कि टेलीविजन दुनिया के बारे में नैतिक मूल्यों और सामान्य मान्यताओं को आकार देता है, इसके प्रभाव छोटे, क्रमिक, अप्रत्यक्ष और महत्त्वपूर्ण होते हैं। उनका सुझाव है कि मास मीडिया एक संस्कृति के भीतर मौजूदा दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करता है, इसे एक साथ बांधता है और मध्यम-मार्ग के राजनीतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

7. मीडिया निर्भरता सिद्धांत–सिद्धांत बताता है कि लोग अपनी जरूरतों और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए मीडिया की जानकारी पर बहुत ज्यादा निर्भर रहते हैं। यह सुझाव देता है कि सामाजिक संस्थाएँ और मीडिया दर्शकों के साथ बातचीत करते हैं, जिससे रुचियाँ और जरूरतें पैदा होती हैं। सिद्धांत बताता है कि जैसे-जैसे व्यक्तियों की मीडिया पर निर्भरता बढ़ती है, यह उनके जीवन में और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। आधुनिक समाजों

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

में मीडिया को सामाजिक, समूह और व्यक्तिगत कार्यों के लिए एक आवश्यक सूचना प्रणाली माना जाता है।

8. एजेंडा सेटिंग सिद्धांत–एजेंडा सेटिंग सिद्धांत यह मानता है कि मास मीडिया जनमत को प्रभावित कर सकता है और महत्त्वपूर्ण मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा कर सकता है। यह मानता है कि मीडिया कथित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए वास्तविकता को फिल्टर और आकार देता है। सिद्धांत एजेंडा सेटिंग के लिए समय सीमा पर भी प्रकाश डालता है, जो मीडिया में अलग-अलग होती है। संचार विविध उद्देश्यों की पूर्ति करता है और समाज के भीतर संबंधों को बनाए रखता है, जो सामाजिक व्यवस्था के भीतर संतुलन बनाए रखने के महत्त्व पर प्रकाश डालता है।

संचार के मॉडल

संचार सिद्धांत बहु-विषयक हैं, जो समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और राजनीति विज्ञान से अवधारणाएँ लेते हैं। संचार मॉडल किसी वस्तु या घटना का एक व्यवस्थित प्रतिनिधित्व है, जो समस्याओं की पहचान करने और उन्हें संबोधित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। यह संचार संरचना को स्पष्ट और सरल बनाता है, ग्राफिक रूप में नए आयाम प्रदान करता है। संचार मॉडल तत्वों को व्यवस्थित करने, जटिल अवधारणाओं को समझाने और संभावित परिणामों या घटनाओं के अनुक्रमों को सूचीबद्ध करने जैसे लाभ प्रदान करते हैं।

मॉडल के प्रकार–

1. रैखिक मॉडल–यह एकतरफा संचार जनसंचार में इस्तेमाल किया जाने वाला एक शक्तिशाली उपकरण है, लेकिन इसमें फीडबैक की कमी होती है और यह निरंतर नहीं होता है। उदाहरणों में अरस्तू, शैनन और वीवर और हेरोल्ड डी. लासवेल के मॉडल शामिल हैं, जो निरंतर प्रक्रिया नहीं हैं।

अरस्तू का मॉडल–संचार का अरस्तू का मॉडल, जो 300 ईसा पूर्व का है, संचार का सबसे पुराना रूप है। यह वक्ता को केंद्रीय तत्व के रूप में महत्त्व देता है, निष्क्रिय दर्शकों को संदेश देता है, सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है। वक्ता अवसर और लक्षित दर्शकों के अनुसार भाषा, सांस्कृतिक विश्वासों, जरूरतों और दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए भाषण तैयार करता है। भाषण प्रेरक और प्रभावशाली होना चाहिए, प्रभाव पैदा करने वाला होना चाहिए, लेकिन प्रतिक्रिया की अनुमति नहीं देनी चाहिए। इस मॉडल का उपयोग मुख्य रूप से सार्वजनिक भाषण और प्रचार में किया जाता है, जिसमें रिसीवर पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, भले ही दर्शक प्रतिक्रिया न दें।

शैनन और वीवर मॉडल–1949 में विकसित शैनन-वीवर मॉडल, शोर बाधाओं की पहचान करके प्रेषक और रिसीवर के बीच संचार को सुविधाजनक बनाने पर केंद्रित है। इसमें छह तत्व शामिल हैं–स्रोत, एनकोडर, संदेश, माध्यम/चैनल, डिकोडर और रिसीवर। मॉडल सूचना के प्रसारण और प्राप्ति पर जोर देता है, जिसमें प्रेषक स्रोत के रूप में, एनकोडर ट्रांसमीटर के रूप में, चैनल माध्यम के रूप में, डिकोडर रिसीवर के रूप में और शोर व्यवधान के रूप में होता है। यह संचार का दो-तरफा प्रवाह है, जो नए मीडिया युग में पारस्परिक और समूह संचार के लिए लागू है। हालांकि मॉडल की आलोचना एक निष्क्रिय रिसीवर पर ध्यान केंद्रित करने और प्रतिक्रिया को अनदेखा करने के लिए की गई है।

हेरोल्ड डी लासवेल का मॉडल–हेरोल्ड डी लासवेल, एक राजनीतिक वैज्ञानिक, ने एक्शन मॉडल पेश किया, जो 1948 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों के दौरान प्रचार और राजनीतिक अभियान का अध्ययन करने के लिए एक रैखिक मॉडल था। यह मॉडल संचार प्रक्रिया के पाँच घटकों की पहचान करता है, जिसमें प्रेषक, माध्यम, प्राप्तकर्ता और प्रतिक्रिया शामिल है और संचार में शोर एवं बाधाओं को अनदेखा करता है।

2. लेन-देन मॉडल–हेलिकल मॉडल और गेट कीपिंग मॉडल जैसे लेन-देन संबंधी मॉडल का उपयोग पारस्परिक संचार के लिए किया जाता है, जिससे एक साथ फीडबैक प्राप्त होता है और पर्यावरण और शोर सामग्री पर विचार किया जाता है।

संचार या नृत्य मॉडल का हेलिकल मॉडल–फ्रैंक ईएक्स. डांस का 1967 का संचार मॉडल, जो सर्पिल या हेलिक्स से प्रेरित है, सुझाव देता है कि संचार एक गतिशील, हमेशा बदलती रहने वाली और हमेशा विकसित होने वाली प्रक्रिया है। यह सुझाव देता है कि प्रेषक और प्राप्तकर्ता की भूमिकाएँ अदला-बदली योग्य होती हैं, जिससे यह एक द्वैती प्रक्रिया बन जाती है। डांस का मॉडल बुद्धि और अटकलों को भी संचार को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारकों के रूप में मानता है। यह प्रक्रिया समय और पिछले अनुभवों के साथ ऊपर की ओर बढ़ती है।

गेट कीपिंग मॉडल–1943 में, कर्ट जेडेक लेविन ने गेट कीपिंग की अवधारणा पेश की, जो महत्त्व और प्रासंगिकता के आधार पर सूचना का चयन करने की एक प्रक्रिया है। डेविड मैनिंग व्हाइट द्वारा विकसित यह प्रक्रिया अवांछित, अप्रासंगिक और पूर्वाग्रही सामग्री को फिल्टर करती है। समाचार व्यवसाय में, संपादक गेट कीपिंग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, समाचार योग्य वस्तुओं का चयन सुनिश्चित करते हैं और समाचार के मानक को बनाए रखते हैं। गेटकीपर की भूमिका मीडिया प्रभाव के लिए एक सामाजिक नियंत्रक के रूप में कार्य करना है, यह सुनिश्चित करना कि मीडिया सामाजिक प्रभाव के लिए जिम्मेदार बना रहे।

3. इंटरसेक्शनल मॉडल–इंटरनेट जैसे नए संचार के लिए प्रयुक्त अंत:विभागीय मॉडल, अभिसरण को सुगम बनाता है अनुभव के क्षेत्र को सम्मिलित करता है तथा फीडबैक प्राप्त न होने पर संचार को रैखिक बना सकता है।

विल्बर श्राम का संचार मॉडल–1954 में विल्बर लैंग श्राम ने शैनन और वीवर के संचार मॉडल का विस्तार किया, जिसमें संदेशों को एनकोड करने और डिकोड करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। उन्होंने शैनन के छह तत्वों में फीडबैक और अनुभव के क्षेत्र को जोड़ा, जो संदेश की प्रभावशीलता को दर्शाता है। श्राम ने एक काल्पनिक क्षेत्र भी पेश किया, संचारक की मानसिक और सामाजिक रचना, जिसमें मूल्य, विश्वास, अनुभव और अर्थ शामिल हैं। संदेशों की अलग-अलग व्याख्याएँ संचार प्रक्रिया को जटिल बना सकती हैं, जिससे यह सफल संचार के लिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है। संचार में व्याख्या अर्थपूर्ण या अर्थपूर्ण हो सकती है, अर्थपूर्ण अर्थ शाब्दिक और अर्थपूर्ण अर्थ भावनात्मक या अनुभवात्मक हो

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सकते हैं। सफल संचार के लिए साझा अनुभव और सामाजिक जानकारी की आवश्यकता होती है। संचार मॉडल समझ में योगदान करते हैं, जिसमें उपयुक्तता के बारे में बहस होती है। सामंजस्य विविध तरीकों और विद्वत्ता की सराहना में पाया जा सकता है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. संचार और मानव जीवन में इसके महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संचार सिद्धांतों को स्टीफन टर्नर (1994), जॉन बोवर्स और जॉन कोर्टराइट (1984) और जॉन बोवर्स और जॉन कोर्टराइट (1984) जैसे विद्वानों द्वारा परिभाषित किया गया है। टर्नर घटनाओं के बारे में कहानियों के साथ सिद्धांतों की तुलना करते हैं, तर्क देते हैं कि वे ब्रह्मांड में मौलिक गुणों और प्रक्रियाओं के बारे में एक परिकल्पना से शुरू होते हैं। बोवर्स और कोर्टराइट सिद्धांतों की एक पारंपरिक वैज्ञानिक परिभाषा प्रस्तावित करते हैं।

संचार मानव अस्तित्व का एक मूलभूत पहलू है, जो जीवन को रचनात्मक और उद्देश्यपूर्ण अर्थ प्रदान करता है। संचार की एक संतुलित समझ बाकी क्षेत्र के लिए महत्त्वपूर्ण है। सिद्धांत संचार पर एक दृष्टिकोण है और एक उपयुक्त सिद्धांत का गठन करने के लिए बहुत सहमति और असहमति है। यहाँ चर्चा का उद्देश्य विभिन्न दृष्टिकोणों और पहलुओं से अध्ययन किए गए संचार सिद्धांतों का अवलोकन प्रदान करना है, जिसका उद्देश्य संचार की प्रक्रिया की व्यापक समझ प्रदान करना है।

संचार मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है, जो हमें एक-दूसरे से जोड़ता है और हमारे विचारों, भावनाओं और ज्ञान को साझा करने में मदद करता है। संचार के बिना मानव जीवन अधूरा और अकेला होगा। यह हमें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करता है, जिससे हम अपने रिश्तों को मजबूत बना सकते हैं और समाज में अपनी जगह बना सकते हैं।

संचार का महत्त्व विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है, जैसे कि शिक्षा, व्यवसाय, राजनीति और सामाजिक जीवन में। शिक्षा में संचार शिक्षकों और छात्रों के बीच ज्ञान को साझा करने में मदद करता है। व्यवसाय में संचार कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच संबंधों को मजबूत बनाने में मदद करता है। राजनीति में संचार नेताओं और जनता के बीच संवाद में मदद करता है। सामाजिक जीवन में संचार परिवार और मित्रों के बीच संबंधों को मजबूत बनाने में मदद करता है।

इसके अलावा संचार हमें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करता है, जिससे हम अपने मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं। यह हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है और हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद करता है। इसलिए, संचार मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और इसके बिना, हमारा जीवन अधूरा और अकेला होगा।

प्रश्न 2. संचार के विभिन्न तत्व क्या हैं?

उत्तर–विभिन्न परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि संचार प्रक्रिया के विभिन्न तत्त्व होते हैं। बेरलो (1960) ने संचार प्रक्रिया का एक मॉडल तैयार किया है, जिसमें संचार प्रक्रिया के आठ तत्त्वों को दिखाया गया है। इसको एस.एम.सी.आर. (SMCR) संचार मॉडल के नाम से अभिहित किया जाता है। ये विभिन्न तत्त्व निम्नलिखित हैं–

1. स्रोत, 2. कूटभाषा, 3. संदेश, 4. चैनल, 5. प्राप्तकर्त्ता, 6. कूटानुवाद, 7. आधार सामग्री एवं 8. शोर या आवाज

1. स्रोत–सन्देश भेजने वाला स्रोत होता है, जो संदेश का उद्गम स्थल होता है। यह सन्देश संप्रेषक व्यक्तिगत या संस्थागत हो सकता है, जिसमें कुछ विचार या सूचना दूसरे को भेजी जातीं है। जैसे अध्यापक कुछ विषयसामग्री छात्रों तक पहुँचाता है या एक विस्तार सेवा एजेंट किसानों को कई कृषि पद्धतियों के विषय में जानकरी देता है।

2. कूट भाषा–कूट भाषा का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसमें कुछ विशेष संकेतों या प्रतीकों के माध्यम से विचारों का अनुवाद किया जाता है। कूटभाषा बहुत महत्त्वपूर्ण होती है, क्योंकि इसके बिना विचारों को प्रेषित नहीं किया जा सकता। कूटभाषा के उदाहरण भाषा, संकेत और चित्र आदि होते हैं। इन्हीं के माध्यम से सन्देश देने वाला अपने विचारों को स्पष्ट करता है।

3. सन्देश–सन्देश स्रोत की प्रेरणा या विचार होता है, जिसे प्रेषित किया जाता है। यह इसका भौतिक रूप होता है, जिसमें कूट भाषा का प्रयोग किया जाता है। सन्देश को अनेक प्रकार से संचारित किया जा सकता है। जैसे–संकेत या चित्र, बोलकर, लिखकर आदि।

4. चैनल या माध्यम–संदेश को जिस साधन के द्वारा संचारित किया जाता है, उसे चैनल या माध्यम कहा जाता है। प्राय: यह माध्यम वायु, आमने-सामने, आपसी वार्ता, समूह की बैठकें, टेलीफोन, रेडियो, समाचारपत्र, दूरदर्शन तथा लिखित सामग्री होती है। चैनल ज्यादा आवाज या खराब मौसम से भी प्रभावित होता है।

5. प्राप्तकर्त्ता–सन्देश प्राप्त करने वाले को प्राप्तकर्त्ता कहते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षण में अध्यापक और छात्र दोनों प्राप्तकर्त्ता हो सकते हैं। अध्यापक उस समय प्राप्तकर्त्ता होता है, जब वह छात्र की बात सुनता है। इसी प्रकार छात्र-शिक्षक से विषयवस्तु प्राप्त करता है। कृषि में विस्तार एजेंट किसानों की समस्याओं को सुन सकता है। संचार को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सन्देश की सामग्री इस प्रकार से तैयार की जाती है, जिसे प्राप्तकर्त्ता आसानी से समझ जाए और उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करे।

6. कूटानुवाद–सन्देश प्राप्तकर्त्ता कूटानुवाद करता है, जिसकी प्रक्रिया आगे निम्नलिखित प्रकार से बढ़ती है–

(i) सर्वप्रथम संदेश प्राप्तकर्त्ता उस सन्देश को समझता है और उसका उत्तर देता है। अर्थात सन्देश का अनुवाद करके उसका अर्थ ग्रहण करता है।

(ii) भाषा के प्रतीकों को समझकर प्राप्तकर्त्ता उसका समुचित अर्थ निकालता है।

(iii) संदेश की व्याख्या करना प्राप्तकर्त्ता की पृष्ठभूमि और उनके अनुभव पर आधारित होता है।

(iv) वही संचारण सफल होता है, जिसमें स्रोत के सम्पूर्ण आशय को समझकर प्राप्तकर्त्ता उसका सही उत्तर दे सके।

7. आधार सामग्री–संचार संप्रेषण में आधार सामग्री बहुत महत्त्वपूर्ण होती है, जिसको स्रोत द्वारा प्राप्तकर्त्ता को भेजा जाता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com